धर्म जीवन

मई 2007

एक साधन

मुख्य साधन

आपकी ज्योति मुझे असली रूप दिखाती है

पति पत्नी का मधुर सम्बन्ध

अन्ध विश्वास और गरीबी

अन्धे पैरोकार न बनें

शुभ संग्राम

धर्म के लिए विद्रोह

एक साधन

1. हे भगवान! आप ने मुझे अति तुच्छ और अदना वजूद को अपनी शरण का अधिकार देकर मेरे हित और परम हित का मार्ग खोल दिया। भगवान मैं बहुत ही अदना वजूद जो मिथ्या और पाप भरे वातावरण में जन्मा और पला जहां मेरा पूर्ण नाश हो जाना था। सतगुरु आप ने मुझे यू हीं गर्क हो जाने से बचा दिया। भगवान मुझे तो मोटे - मोटे पापों ने ही खा जाना था। हे सतगुरु जी, नशों से मैं न बच पाता और एक - एक नशा ही मुझे बरबाद कर जाता। पाश्विक वासना ने मेरा अलग कचूमर निकाल देना था। मेरे अपने अंह का कोई पता तक न चलना था। और मैं हर जगह टकरा - टकरा कर अपना मुँह माथा फोड़ कर अपना नाश कर लेता। स्वार्थ, लालच और मोह का पता तक न चलना था। उफ! क्या और कैसा इबरत नाक हशर होना था। सतगुरु एक नरक का कीड़ा बनकर व रहकर और घुल - घुल कर व ना काबिले बर्दाशत अजाब सहकर नष्ट होने के सिवा और कुछ मेरे नसीब में ना होना था। ऐसे नरक के एक कीट को आप ने अपना जीवनप्रद साया बख्श दिया। सतगुरु ने अपनी शरण में मुझ अदना को ले लिया। गो आपकी शरण में भी बहुत लम्बा अर्सा नीच राग गिद्धों की तरह मेरी रूह को नोचते रहे, ओर मैं इसमें ही मस्त रहा।

2. सतगुरु बड़ी उमर होने पर मुझे आपने मेरे महा घातक अंह का बोध पाने के साधनों में लगा दिया। आपने मुझे कोई प्राय: एक चौथाई सदी पहले अपनी नीचता पर चिंतन करने और उसे प्राय: हर रोज लिखने में लगा दिया। सतगुरु इस साधन से धीरे - धीरे मेरा अंह कोष मुझ पर आप ने बे - नकाब करा दिया और उससे बचने के लिए बल प्रदान करके संग्राम में डाल दिया। इसके फलस्वरूप मेरे तक किसी न किसी अंश आप का अमूल्य अमृत, आपका देव तेज मुझे रसीद होने लगा, और मेरे रूहानी कोढ़ी पर अपना कारज़ करने लगा। फिर आपके अमृत में मेरे घृणित पिशाच और वासनिक कुत्ते रूप को बदला। मेरे को उस की भयानक और मुहलक और जान लेवा लालसा की दल - दल से आपने उभार लिया है।

3. हे! सतगुरु मेरी कैसी महा मलिन, महा अशिष्ट और पिशाच और व महा घृणित अवस्था थी, इसका नक्शा अब जब सामने आता है, तो भगवान खौफ से रूह काँप उठती है, विनाश और अजाब के जहनम की झलक साफ - साफ दिखाई देती है। भगवान एक नरक के कीड़े को किसी अंश कुछ पवित्र करना और किसी अंश पाक साफ करना आपके अमूल्य अमृत के जादू का काम है। भगवान ये नरक का कीट इस नई जान फूंकने के महा उपकार का क्या शुक्रिया अदा कर सकता है, कहाँ से शब्द और भावों को प्राप्त कर सकता है। सतगुरु फिर आपका अमूल्य अमृत मेरे धन धरती के लोभ के कोढ़ को दिखाता है, स्वार्थ और लोभ की जकड़ की भयानक गुलामी को न सिर्फ दिखा रहा है, बल्कि इससे भी इस कोढ़ी को निजात देने की राह पर डाल रहा है। भगवान आप मेरी रूह की जान का नियम हो। आप से परे मौत ही मौत है, अजाब ही अजाब है। आप की शरण में पड़ा रहूं। आप की शक्ति मुझे आपकी शरण में पकड़े रखे। और इस नारकीय कीट का जो बन पाना मुमकिन है वो बन सके। आपके प्रति प्रेम सूत्र के लोक तक रसाई की संभावना प्राप्त हो सके।

जत किंचत

धर्म जीवन

खण्ड 19 अंक 5
मई 2007
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

मुख्य साधन

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का आविर्भाव विकास क्रम का अद्भुत शाहकार वा देन है। मनुष्य जीवन की सफलता को उनके सम्बन्ध के साथ नेचर ने पूरा-पूरा निर्भर रखा है। जिस प्रकार मनुष्य का शरीर, हवा, पानी व खुराक पर अटूट निर्भर है, उसी प्रकार मनुष्यात्मा की रक्षा और विकास देवात्मा के देव प्रभावों पर अटूट निर्भर है।

मनुष्य को देवात्मा की शरण प्राप्त होना, उसका सबसे बड़ा और परम सौभाग्य है। देवात्मा का सेवक बनना, उनकी शिक्षा का शिक्षार्थी बनना या उनके मिशन में सेवाकारी बनना, उनके मिशन का प्रचारक बनना, किसी भी मनुष्य का अतिशय महान अधिकार है वा सौभाग्य है।

इस महा सौभाग्य की पूर्ण सफलता केवल मिथ्या देवी देवते, ईश्वर, अल्ला वाहगुरु को छोड़ने वा मोटे निर्धारित पापों से बचने या कुछ मिशन के लिए कुर्बानी वा सेवा करने से नहीं हो सकती। (बेशक इससे भी काफी भला होता है।) इसकी सफलता विशेष योग्यता के पैदा होने से सम्बन्धित है। यह योग्यता है देवात्मा के आद्वितीय देव जीवन के देव प्रभावों को प्राप्त कर सकने की और उसको बढ़ाने की। देवात्मा रुहानी जगत के सूर्य प्रगट हुए हैं, उस सूरज की रोशनी तक पहुंच पाने की इच्छा और योग्यता बहुत ही परम आवश्यक वस्तु है। देवात्मा के परम कल्याणकारी देव प्रभावों तक रसाई प्राप्त करने के लिए जो साधन अत्यन्त अवश्यक हैं, वही साधन परम आवश्यक साधन है और हम सबके लिए मुख्य यही साधन है।

प्रश्न पैदा होता है, हम जो साधन करते हैं, गुरु महाराज की प्यारी फोटो लेकर, उसको साफ करके फूलों से सजाकर, महिमा के गीत गाकर, पूजनीय देव स्तोत्र गाकर, सत्गुरु को बार-बार प्रणाम करके, उनसे देव प्रभावों के लिए भिक्षा मांग कर, फिर उनके पूजनीय ग्रंथों में से पाठ करके, जो साधन करते हैं, वह साधन मुख्य साधन नहीं? यह साधन हैं तो बहुत आवश्यक, परन्तु अकसर यह साधन एक अभ्यास बन जाते हैं, कभी-कभी कुछ प्रभाव भी मिल जाते हैं, परन्तु इन साधनों को पूर्ण सार्थक बनाने के लिए हमें अकसर वा हररोज देवात्मा की महा हितकर वा अलौकिक ज्योति मिल सके, एक और साधन करना और भी आवश्यक है, वह साधन जिससे देवात्मा के देव प्रभावों तक ठोस

रसाई प्राप्त हो सके, वह साधन एक मुख्य साधन है।

शायद महान साधक श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज का ही भजन है, जिसमें मुख्य साधन की बात की गई है, और कहीं मुख्य साधन का जिकर कम ही देखने को मिलता है, उन्होंने फरमाया है :-

"जीवन के सारे लाभों से धर्म का लाभ बढ़कर है,
तुम्हारी ज्योति दिखलावे, तुम्हारी ज्योति मिल जावे।
तुम्हारी ऐसी ज्योति की, मुझे अतिशय जरूरत है,
तुम्हारी ज्योति मिल जावे, तुम्हारी ज्योति मिल जावे।
तुम्हारी ज्योति पाने का, कौन सा मुख्य साधन है,
तुम्हारी ज्योति दिखलावे, तुम्हारी ज्योति मिल जावे।

सो परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभावों तक रसाई पाने के लिए लगभग सब मनुष्यात्माओं को इस मुख्य साधन (केवल एक अनुरागी बनने की योग्यता रखने वाली श्रद्धेया जी जैसी महान रुहों को छोड़कर) के बहुत गंभीरता से जानने की और अपनी योग्यता के अनुसार जीवन भर पूरे करते रहने की बहुत आवश्यकता है।

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज इस सम्बन्ध में अपना अनुभव लिखते हैं :-

"यह बात बहुत स्पष्ट रूप से सामने आ सकती है कि मैं परम पूजनीय भगवान देवात्मा की शरण में आने से पहले, आत्म अन्धकार में इस कदर लिप्त और नीच गति दायक शक्तियों के महा विनाशकारी अन्धकार में इस कदर ग्रस्त था कि पूजनीय भगवान की शरण ग्रहण करके और लगातार उनके श्री चरणों में रहकर भी मुझे उनकी आत्म प्रकाशक देव ज्योति के प्राप्त करने, उस ज्योति में अपनी आत्मिक असल अवस्था को देखने और अपने अन्दर की नीच गति दायक शक्तियों का प्रकृत बोध प्राप्त करने में वर्षों लग गए। मैं वर्षों तक क्या दूसरे सम्बन्धियों के सम्बन्ध में और क्या परम पूजनीय भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न प्रकार की घृणित और महा विनाशकारी गतियां करता रहा और उन गतियों को करके वर्षों तक मुझे साधारण यह भी पता नहीं लगा कि मैं कोई नीच गतियां करता हूँ (12-15-वर्ष लगे) इस बात से अनुमान लग सकता है कि यदि श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज को गुरु महाराज की ज्योति तक स्थाई पहुंच प्राप्त करने के लिए इतना लम्बे समय की अड़चन भी आ सकती है, तो हम साधारण आत्माओं का क्या हाल हो सकता है? श्रद्धेय श्रीमान जी ने लगभग अपने अन्तिम सांस तक मुख्य साधन को अपनाए रखा। लगभग 100 वर्ष हो रहे हैं। जब उन्हें गुरु महाराज जी ने यह साधन करने के लिए फरमाया था। वह मुबारक दिन मई 1904 का था।

जैसे चीन और रूस की बर्फ जैसी शीतल हवाओं को हिमालय भारत आने से रोके रखता है, उसी प्रकार हमारा तकरीबन सब मनुष्यों का अंह अनुराग विशेष रूप से घमंड और नीच घृणा देवात्मा के देव प्रभावों को हमारे तक पहुंचने में दिवार बनकर रोके रखते हैं। देवात्मा की देव ज्योति और शक्ति की प्राप्ति के सम्बन्ध में इससे बड़ी और भयानक और कोई रोक नहीं। जितना कोई मनुष्य अंह अनुरागी होता है, उतना ही वह अपने आपको इससे मुक्त देखता है। देव ज्योति के बिना जो कुछ मनुष्य वास्तव में है, उस वास्तविकता को वह देख नहीं सकता और जो कुछ मनुष्य है नहीं, वह कुछ वह अपने आपको समझता वा विश्वास करता है।

सब मनुष्य बचपन से ही अंह अनुरागी बनने शुरू हो जाते हैं और फिर सारी उमर अंह अनुराग बढ़ता जाता है।

मनुष्य सुख अनुरागी है, सुख अनुरागी होना या पाप परायण होना, झूठ परायण होना एक ही बात है। मनुष्य होना, पापी, अपराधी, नीच दुर्बल और झूठा होना आवश्यक है। अपने आपको झूठ-मूठ अच्छा, ठीक, बढ़िया, महान और निर्दोष देखना और दिखाने में मनुष्य को सुख मिलता है, तृप्ति मिलती है। यह सोच सारी उमर पक जाती है और मनुष्य को घोर अंह अनुरागी बना देती है। अपने आपको खराब सोचने में मनुष्य को दुख लगता है; उसे नागवार गुजरता है, इसलिए मनुष्य अपने आपको खराब और बुरा नहीं देख पाता।

अंह अनुराग के पहाड़ को अपने और देव ज्योति के बीच में से हटाना और घटाना ही मुख्य साधन है। जो यह कर सकता है, वह देव ज्योति तक अपनी योग्यता के अनुसार स्थाई रसाई कर सकता है।

अपने झूठे, बुरे, नीच, अपराधी, निर्दयी, दोषी और स्वार्थी, लालची, कपटी रूप को बार-बार देखना (हो सके तो साधन में) और उस के ऊपर लगातार लिखना ही अपने सम्बन्ध में बढ़े हुए मिथ्या विश्वास को वा अंह अनुराग को घटा सकता है और योग्यता के अनुसार हटा सकता है। जो यह साधन (जो साधन श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने अपनाया था) निष्ठापूर्वक 6 महीने दिली भावों से कर सकता है, उसको इसके मुख्य साधन होने की यर्थाथता की भी समझ आने लगती है। देवात्मा की ज्योति का भरसक दान अपने आपको वास्तव रूप में जानने का दान, देवरूप के दर्शनों का दान अपने अदृश्य अहं अनुराग को घटाने का सौभाग्य इस मुख्य साधन के अपनाए बिना प्राप्त नहीं हो सकता।

यह मुख्य साधन कैसे करना है और कैसे लिखना है, इस सम्बन्धी श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने अपने भाई श्रीमान हितैशी सिंह जी को एक विशेष पत्र में लिखा था। वह पत्र समाज के साहित्य में कईबार छप चुका है।

हम मनुष्य सब ही नीच अनुरागी वा नीच घृणाकारी हैं। उन भावों की नीच गतियां सदा करते रहते हैं। जब से होश सम्भाला है, उसी समय से अपनी नीचता या अपनी नीच गतियों का घृणित, घिनौना और हानिकारक रूप सामने लाकर प्रतिदिन घण्टा भर के लगभग लिखा जाए।

हम स्वाद अनुरागी हैं। अपने स्वाद अनुराग से बचपन से लेकर किस प्रकार आवश्यकता से अधिक खाया है, चूर्ण वा हाजमौला की गोलियां खानी पड़ी हैं, बिमारिया मोल ली है, किसी को कुछ खाता देखकर कैसे दिल ललचाता रहा है, कैसी कामनाएं उठती रही हैं, इसकी तृप्ति के लिए कैसी-कैसी दोस्ती बनाई है, कैसे चोरी करके भी खाते रहे हैं, किस प्रकार उल्टीयां लगी हैं, पेट खराब हुआ है, दिल के रोग लगे हैं, डाक्टरों के पास घर लुटाए हैं, आंखें खराब हुई हैं, कई प्रकार के दुःख और घाटे उठाए हैं। शुभ कामों में रूकावटें आई हैं। इस प्रकार अपनी हालत को याद करके विस्तार पूर्वक अपनी औकात को लिखना।

हम काम अनुराग के दास हैं, इस वासना ने बचपन से लेकर अब तक क्या-क्या अदना और घृणित नाच नचाए हैं। हमारा मन नीच लालसाओं से भरा हुआ है। किस प्रकार अशिष्ट अभद्र, अश्लील

वा मलीन विचारों और क्रियाओं से अपने आपको नीच बनाया है। हमारी क्या - क्या चिन्ताएं और सोचें रही हैं, क्या - क्या विकार, कलंक वा बदनामी वा भृष्टता से बदहाल हुए हैं। एक - एक अस्तित्व के प्रति आकर्षण ने हमें किस प्रकार नाच नचाएं हैं। हमारी आँखें वा चिन्ता कब - कब मैली हुई है। क्या अशिष्ट इशारे वा हावभाव दिखाए हैं। किस प्रकार सेहत, धन, शिक्षा वा कामकाज में हानियां उठाई हैं। किस प्रकार इस वासना ने वहशी बनाया है, पर सुख, पर इज्जत, पर शान्ति की हानि की है। किस - किस को दुःख पहुंचाए, ऐसी सब गतियां स्मरण करके, जो - जो हमने की हैं, वह लिखी जाएं।

धन अनुराग के हाथों क्या - क्या क्रियाएं हुईं। कहां - कहां ख्याल - ख्याल में बेईमान बनाया। कहां - कहां बेईमानी की, चालाकी की, धोखा वा अन्याय किया, हक अपहरण, हेरा - फेरी मिलावट की, लालच में आकर झूठ बोले, प्रलोभन देने की हेरा फेरियां की हैं, कम तोलने, अधिक पैसे लेने, कपटता, फरेब की गतियां की हैं, इसको लेकर सम्बन्धों में कड़वाहट, टकराहट और दूरियां पैदा की हैं। दूसरों के साथ लड़ाई, झगड़े करके अपमान करने, सीधे सादे इन्सानों को ठगने, लूटने की, चकमा देने की, थोड़ी कीमत की चीज़ का अधिक मोल लेने की, थोड़े काम के लिए अधिक पैसे वसूल करने आदि की चिन्ताओं वा क्रियाओं को याद करके बार - बार लिखना।

हमने दूसरों को लताड़ा है, उनका अनादर वा अपमान किया है, उनको कोसा है, नजायज़ टोका - टोकी की है, दोष निकाले हैं, दुःख दिया है, हाथ उठाया है, बच्चों को मारा है, पत्नी को झिड़का वा बुरा भला कहा है, झगड़े किए हैं, ज्यादतियां की है, अनर्थ वा जुल्म किए हैं, सताया, तड़पाया है और अन्य अन्यायकारी और अपहरणकारी कर्म किए हैं, उन सबको याद करके बार - बार लिखना।

जीव हत्या की गतियां, रक्त बहाने की गतियां, मुर्गे, बकरे और खरगोश आदि की हत्या, बेरहमी से किए हुए जुल्मों को याद करना और लिखना कि कैसे उन्हें खा खाकर पेट को कब्रस्तान बनाया है।

अपने उपकारी माता पिता, अध्यापकों और उपकारियों और सहायकारियों को सताने, गन्दा बोलना, अपमान करना, दुःख देना आदि की गतियों को स्मरण करके बार - बार लिखना।

इसी प्रकार नीच अनुरागों से प्रेरित हो कर की गतियों, विशेष रूप से ईर्षा, द्वेष से, झूठे आरोप लगाकर सताने से जो - जो हृदयों को आघात पहुंचाए हैं, उन्हें याद करके बार बार लिखना।

इस प्रकार इस साधन को प्रतिदिन करना और अपने नीच घृणित रूप को अनुभव करने, उस पर शर्मसार होने और फटकार महसूस करने का साधन ही मुख्य साधन है। इस साधन को कम से कम 6 महीने करने के बाद ही इसकी कीमत का पता चल जाएगा और पूजनीय भगवान की ज्योति भी मिलने लग जाएगी, फिर मनुष्य इसको छोड़ना भी नहीं चाहेगा।

काश! अधिकारी जन अधिक से अधिक इस साधन को ग्रहण कर सकें, इस मुख्य साधन से हम सब का ही शुभ है, समाज का और हमारे परिवार का भी भला इसमें निहित है।

बलदेव सिंह

आपकी ज्योति मुझे अपना असल रूप दिखाती है

मेरे पूजनीय सत्गुरु,

मैं जीवन व्यतीत करता था, परन्तु मैं जीवन की फिलासफी, आत्मिक शक्तियों का महत्त्व, तथा नीच प्रकृति की बेलगाम ताकतों - जिन्हें मैंने अपने अन्दर बढ़ा लिया था, और जो मुझे जंगली पशु बना रही थीं के खतरों से अनजान था। पूर्ण स्वार्थी जीवन व्यतीत करने और दुनिया को अपनी नीच रुचियों की तृप्ति का अखाड़ा बनाने की अपनी भयानक छवि मुझे भयभीत नहीं करती थी। मेरी बेलगाम नीच रुचियां मुझे दूसरों के लिए हानिकारक और दुखदायक बनाती थीं, मेरे दूषित विचार मुझे दूसरों के अधिकारों का अपहरण करने की तरफ ले जाते थे। परन्तु मुझे उनका पता कुछ नहीं था। उन घृणित विचारों और कामों की लड़ी अब अपने असल घृणित रूप में मेरे सामने आ रही है। आपकी ज्योति ने मुझे अपनी पिछली तस्वीर दिखा दी है और मैं अत्यन्त लज्जित हो रहा हूं। मनुष्य के रूप में जन्म लेकर मैं एक जंगली जानवर का जीवन व्यतीत करता था। अंहकार के अधीन होकर मैं अपने उपकारियों का भी अपमान करता था। मेरे ऊपर गलत ताकतों का राज्य था और दूसरों के सम्बन्ध में मैं गलत जाता था। मेरा आत्मा खतरनाक, हानिकारक और विषैले फल पैदा करता था। हाय! मेरी कैसी दशा होती, यदि मैं उसी पथ पर चला चलता। परन्तु आपकी ज्योति ने मेरी उद्दण्ड नीच प्रकृति का हानिकारक रूप मुझे दिखाया है और कम से कम कुछ पतनकारी रुचियों से मेरे भीतर घृणा पैदा कर दी है। मैं उनसे बच गया हूं। मुझे उनके भयानक नतीजों से बचा लिया गया है। अब मैं आपको ज्योति स्रोत जान कर पथ प्रदर्शन प्राप्त करने के लिए आपके चरणों की ओर दौड़ता हूं। आपने एक सीमा तक मेरे भीतर सच्ची सहानुभूति, सच्ची बन्धुता, सच्चा सेवा भाव और उच्च संगत की भूख पैदा की है। मैं बुरी संगत - चाहे वह इस दुनिया के बड़े से बड़े लोगों की भी क्यों न हो - के भयानक फलों को देखने के योग्य हो गया हूं। मैं उनसे परे रहता हूं। मैं प्रतिदिन आपके दर तक पहुंचता हूं और वह बरकतें पाता हूं जिनका मैं वर्णन नहीं कर सकता। वह आनन्द और स्वर्गीय सुख अनुभव करने की वस्तु है, ब्यान करने की नहीं। मेरा जीवन एक सीमा तक सुन्दर बन गया है। आपने इसे हितकर बना दिया है। काश! मेरा दिल सदा श्रद्धा से आपके चरणों में झुका रहे।

आपकी ज्योति हमें होश की अवस्था में रखती है।

मेरे पूजनीय सत्गुरु

आपकी ज्योति महा अमूल्य है, क्योंकि वह मनुष्य को होश की अवस्था में लाती है। मनुष्य आत्मा जो नीच रुचियों और नीच अनुरागों तथा अंहकार की विकृत शक्तियों के आधीन हैं, अपना बहुत सा समय धोखे में गुजारते हैं। ऐसी अवस्था में वह होश जिसमें सच्चाईयां अपने असल रूप में दिखाई देती हैं, सम्भव नहीं है। अपनी ज़ात को ऊंचा समझना, जबकि वास्तव में बात इसके उलट प्रतीत होती है, निपट पागलपन है। विवाह, मृत्यु तथा अन्य अवसरों पर अपनो घमंड को तृप्त करने

के लिए हज़ारों रुपए खर्च करना और भले काम के लिए दान देते समय दिल में दु:ख महसूस करना, पागलपन के सिवाए और कुछ नहीं। केवल धन की खातिर धन इकट्ठा करना और इसी को जीवन का लक्ष्य बनाना पागलपन है। अपने बच्चों को आसमान से उतरे हुए और दूसरों के बच्चों को उनसे घटिया समझना चाहे, सच्चाई उसके उलट ही हो, धोखा और पागलपन। अपने अनाधिकारी बालिग बच्चों के लिए धन छोड़ जाने के लिए धन एकत्र करना, जबकि वह बच्चे अपने पावों पर खड़े होने के योग्य हों, और एक हितकर समाज या मनुष्य मात्र की भलाई की परवाह न करना, जबकि उनका नैतिक हक अधिक हो, पागलपन और उलटी दृष्टि है। मिथ्या विश्वासों को निजी वस्तु समझ कर उनके साथ चिपके रहना और दलील, परीक्षा या तजरबे की अपील को परे फैंकना एक धोखा और पागलपन की बात है। इसी प्रकार अन्य उदाहरण दिए जा सकते हैं।

भगवन्! मैं देखता हूं कि लाखों मनुष्य धोखे में ही जीवन व्यतीत करते हैं। वह असलियत से परे जीवन व्यतीत करते हैं और इसी अवस्था में मर जाते हैं। जिन्हें आपके श्री चरणों में आने और आपके देव ज्योति और देव तेज सम्पन्न देव प्रभावों को पाने का अधिकार मिलता है, वह जानते हैं कि आपके श्री चरणों में रहना कैसा सौभाग्य है। आपकी ज्योति के प्रकाश में यह धोखे दूर होने आरम्भ होते हैं। नीच रुचियां और नीच अनुराग तथा अंह सम्बन्धी शक्तियां, जो बढ़ते-बढ़ते आत्मा के रोग बन गए हैं, उन उच्च शक्तियों से नष्ट होने लगते हैं कि जो उच्च शक्तियां आप अधिकारी मनुष्यों में पैदा करते हैं। यही कारण है कि जब तक यह होश की अवस्था कायम रहती है, आपके तुच्छ सेवक आपकी महिमा के गीत गाते नहीं थकते। उनके इर्द-गिर्द के लोग उन्हें पहले से पूर्णत: भिन्न और आदर के योग्य देखने लगते हैं।

मैंने भी आपके चरणों में बहुत लाभ उठाया है। आपने कुछ सम्बन्धों में मुझे होश की हालत में आने के योग्य बनाया है। इससे आगे अपने उन नीच भावों को देखने योग्य बनाया है, जो धोखे पैदा करते हैं और अब मैं जानता हूं कि मेरी अपनी शक्तियों पर यह भरोसा नहीं किया जा सकता कि वह मुझे ठीक मार्ग पर ले जाएंगी।

सन्तान अनुराग का बोध

मैं आपकी रोशनी में प्राय: प्रतिदिन इन दो विषयों पर विचार करता रहा हूं :-

(क) काम अनुराग मूलक नीच बन्धन।

(ख) सन्तान अनुराग मूलक नीच मोह बन्धन आदि।

सन्तान अनुराग के सम्बन्ध में मुझे जो कुछ अनुभव होता रहा है, वह यह है :-

(1) इस अनुराग से परिचालित होकर मैं अपने बच्चों के स्थूल शरीर को प्यार करता हूं। यह मुझे उनके आत्माओं की सम्भाल और रक्षा की ओर ले जाने की योग्यता नहीं रखता। इसलिए मैं अस्थिर और असार धरती पर चलता हूं; क्योंकि एक तो उनके आत्मिक हित की ओर से अन्धा होकर मैं उनका उच्च कोटि का उपकारी नहीं बन सकता; दूसरे मैं उस वस्तु, अर्थात उनके स्थूल शरीर को जिसे, सदा के लिए इस संसार में रखना असम्भव

है, प्यार करता हूं। अत: मैं अपनी जिन्दगी रेत पर खड़ी करता हूं, और जब मुसीबतें आती हैं - कि जो अवश्य आती हैं - रेत की नींव खिसक जाती है, तब मानो मेरा सब कुछ लुट जाता है। यह अवस्था कैसी भयानक और कितनी शोचनीय।

(2) मुझे केवल उनके स्थूल शरीर ही दिखाई देते हैं। उनकी शारीरिक आवश्यकताएं या शारीरिक सुखों का अभाव जितना मुझे बेचैन करता है, उतना बेचैन मुझे उनकी आत्मिक आवश्यकताएं नहीं करतीं। इससे मेरा बहुत अनिष्ट हो सकता है। जैसा कि उन अनेक जनों का हुआ है जो अपने बच्चों के लिए रुपया छोड़ जाने या उनके शरीरों के लिए सुख स्वाद के सामान जुटाने और उन्हें मानसिक शिक्षा देने के लिए उच्च वातावरण को छोड़ कर गए हैं, और अपने बच्चों को भी उससे बाहर ले गए हैं। मुझे पता है कि कुछ अवस्थाओं में माता पिता की गलती के कारण बच्चे देव समाज को छोड़ गए हैं।

(3) यदि यह सन्तान का अनुचित प्यार बहुत बढ़ जाए, तो यह मुझे उच्च जीवन और पर - सेवा से दूर ले जाएगा और मेरा बहुत सा कार्यगत समय स्वार्थ पूर्ति में व्यतीत होगा और मैं खुशी - खुशी नीच वस्तु के लिए श्रेष्ठ वस्तु की कुरबानी कर दूंगा।

(4) यह मुझे अन्यायकारी (Unjust) और अनुदार (unfair) बनाता है।

(5) इसके अधीन रहकर मुझे अपने बच्चों के तो पहाड़ जैसे दोष भी राई जितने दिखाई देते हैं और दूसरों के छोटे दोष ही पहाड़ जितने लगते हैं। इस प्रकार मेरी देखने की ताकत पर परदा छा जाता है।

(6) सन्तान का प्यार नीच आत्माओं को मेरा मालिक बनाता है जो कि एक भयानक स्थिति है।

(7) जितने अंश यह मोह बलवान होता है, उतने ही अंश आपके साथ मेरा सम्बन्ध कमजोर होता है। मैं इसे अपना बड़ा दुर्भाग्य समझता हूं।

(8) उच्च जीवन में मेरा विकास खतरे में पड़ जाता है। मैं अब इस अंग में अपने आपको अधिक रोशनी में पाता हूं। और अभी कई महीने और कई वर्ष मैं इस पर चिन्तन करूंगा। सम्भव है, आपकी शक्ति पाकर मैं इन नीच अनुरागों से ऊपर हो सकूं।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

पति पत्नी का मधुर सम्बन्ध

पति पत्नी मिलकर घर बनाते हैं, परन्तु अकसर घर बसेरे बन जाते हैं, जहां दोनों का साथ रहना एक मजबूरी बन जाता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि घर को वास्तविक आनन्द दायक बनाने में पत्नी का अहम भाग है। यदि पत्नी पति के घर में आने से ऐसा वातावरण बनाती है कि पति पूरी तरह relax अनुभव करता है, तो कई प्रकार की समस्याओं का समाधान हो जाता है।

महत्त्वपूर्ण यह है कि पति पत्नी के प्रति हमदर्द, सहयोगी ख्याल रखने वाला वा प्यार करने वाला हो, तो पत्नी उसके इन गुणों से प्रभावित होकर एक खुशनुमा वातावरण को पैदा कर सकती है। यदि पति क्रूर हो, पत्नी को बराबर का दर्जा न देता हो, शराबी हो, जुएबाज हो, पर स्त्रियों के प्रति झुकाव रखता हो तो अकसर पत्नियों की अनथक कोशिशें भी निष्फल हो जाती हैं।

कुछ ऐसी बातें हैं, जो यदि ध्यान में रखी जाएं तो पति पत्नी का सम्बन्ध मधुर हो सकता है।

परस्पर बातचीत :- आजकल की भागदौड़ में जहां पति पत्नी दोनों ही कामकाजी हों, वहां पर अकसर मिलकर बैठने वा सौहर्दय पूर्ण वातावरण में बातचीत का समय बहुत कम मिलता है। इसके लिए दोनों पति पत्नी को योजना बनाकर कम से कम हफ्ते में एक बार ऐसा समय निकालना चाहिए, जब वह आपस में खुलकर अकेले में बातचीत कर सकें। बिना किसी डर या हिचकिचाहट के एक दूसरे से जो भी शिकायत हो उस पर विचार विमर्श कर सकें ताकि आगे के लिए दोनों उस विषय में सतर्क रहें। परन्तु नम्रता, सम्मान वा प्यार से वाद विवाद हो। एक दूसरे को सुझाव दे सकें। पति पत्नी दोनों अलग-अलग वातावरण में पलते हैं तो उनके विचार वा व्यवहार भी भिन्न-भिन्न होंगे, तो आवश्यक है कि कुछ सुधार किए जाएं वा कुछ सहन करने की आदत डाली जाए।

हालात के साथ तालमेल बढ़ाना सीखें :- यह एक बहुत ही कीमती गुण है। यदि किसी कारण कोई प्रोग्राम CANCEL हो जाता है, तो मुंह फुलाने की बजाए, खुशी-खुशी दूसरे की मजबूरी को समझ कर उन लम्हों को खुशनुमा बना लें। अपनी इच्छाओं की एक दूसरे के लिए कुर्बानी देने से प्यार और सत्कार बढ़ता है।

आकर्षक बने रहें :- शादी से पहले प्रत्येक लड़का और विशेष रूप से लड़की पूरा यत्न करती है कि उसका व्यक्तित्व आकर्षक बना रहे, परन्तु शादी के बाद बिल्कुल लापरवाह हो जाते हैं। बच्चे होकर बदसूरत बन जाना एक बहाना है। काम का बहाना करके समय पर न नहाना धोना, घर में साफ सुथरा रह कर आकर्षक बने न रहना भी कई पति पत्नियों के तकरार वा मनमुटाव का कारण बन जाता है। पति शाम को घर आता है, तो बिखरे

बाल ढीले मैले कपड़े, बच्चों की बिखरी किताबें व खिलौने, उसे आते ही एक ग्लानि से भर देते हैं। कनल जी ने एक घटना लिखी है कि कैसे अपने इस रवैया को Change करने से ही एक घर टूटने से बच गया। पत्नी जो प्रतिदिन पति के घुसते ही कामों की List पति को पकड़ा देती थी, उसने अपना व्यवहार बदला। घर साफ किया, स्वयं साथ सुथरी बनकर पति के आते ही उसे चाय नाश्ता दिया, प्यार भरी बातें की पति खुशी से भर गया और खुशी-खुशी वह सारे काम भी कर दिए।

इसी प्रकार पति को भी अपने रहने सहने में अवश्य इतना ख्याल रखना चाहिए कि वह उपहास का कारण न बनें ताकि पत्नी हीन भावना की शिकार न हो जाए।

प्यार भरा व्यवहार :- आप छोटी-छोटी बातों से एक दूसरे के प्रति अपने प्यार का इज़हार कर सकते हो। पत्नी कभी-कभी पति की विशेष पसन्द की खाने की वस्तु बनाकर। अपने घर में एक दूसरे की विशेष अवश्यकता की वस्तु लाकर थके होने पर एक दूसरे की थोड़ी सी भी सेवा करके या इतना इज़हार भी प्रेम का प्रतीक होता है कि यदि एक दूसरे को यह कहा जाए कि आज आप बहुत थके हुए हो, अब आप आराम कर लो। पत्नी के थके होने पर यदि पति चाय का एक कप भी बना देता है, तो पत्नी गद्-गद् हो जाती है। छोटी-छोटी बातें प्रेम की प्रतीक होती हैं।

क्षमा करना सीखें :- कई घरों में गड़े मुर्दे उखाड़ने की आदत होती है, एक गल्ती होने पर पिछली सब गल्तियां दोहराई जाती हैं, जिससे कड़वाहट बढ़ जाती है। कोई भी Perfect नहीं होता। एक दूसरे की गल्तियों को क्षमा करने से घर का वातावरण आनन्दमय बन जाता है।

वफादारी :- पति पत्नी के सम्बन्ध में वफादारी, ईमानदारी का मुख्य स्थान है। बेवफाई से साथी को जो चोट पहुंचती है, जो उसके आत्म सम्मान को ठेस पहुंचाती है, उससे घरों में नर्क पैदा हो जाता है। आज के युग में यह बहुत बड़ा दोष दिन पर दिन फैल रहा है। घर तबाह हो रहे हैं, तलाक हो रहे हैं, बच्चों की जिन्दगियां दाव पर लगी हुई हैं। इस दोष से बचकर ही परिवार खुशहाल रह सकता है।

खुशमिजाजी :- पति पत्नी के रिश्ते में हल्का फुल्का मनोरंजन वा मजाक भी जिन्दगी को खुशी से भरता है। कई घरों में जाओ तो पति पत्नी वा घर का Serious माहौल देखकर आपका दम घुटने लगता है। चेहरे पर मुस्कुराहट वा घर में हंसी मजाक जिन्दगी को रसमय बनाता है। परन्तु हंसी मजाक में आलोचनात्मिक व्यवहार कड़वाहट भी भर देता है, इसलिए हंसी मजाक में भी एक दूसरे का सन्मान नहीं खोना चाहिए। दूसरों के सामने एक दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश न हो। यदि इन बातों का पति पत्नी ध्यान रखें तो परिवारिक जीवन बहुत सुखमय और मधुर हो सकता है। पति पत्नी एक दूसरे की उन्नति में भी सहायक हो सकते हैं जो पति पत्नी के रिश्ते का मुख्य लक्ष्य है।

सुरजीत बराड़

अंधविश्वास और गरीबी

रामजीदास मोदानी

धर्म के नाम पर सुविधाएं प्राप्त करने वाले आलसी और निठल्ले लोगों के होते हुए बेकारी और गरीबी कैसे दूर होगी?

हमारे देश से आजादी के लगभग 50 वर्ष बाद भी आज जैसे गरीबी और बेकारी दूर नहीं हो पाई है, इससे हम सभी का चिंतित होना स्वाभाविक है पर यदि गहराई से विचार किया जाए तो हम इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि हमारे धार्मिक और सामाजिक अंधविश्वास ही हमारी वर्तमान स्थिति के लिए पूरी तरह जिम्मेदार हैं। अमरीका के वैज्ञानिक तो चंद्रमा तक की यात्रा कर आए हैं और हमारा समाज अब भी अंधविश्वासों और रूढियों के भंवरजाल में उलझा हुआ है।

हमारे देश में बच्चों के लिए तो पूरा दूध उपलब्ध होता नहीं, पर सैकड़ों मन दूध देवीदेवताओं की मूर्तियों पर उड़ेल कर नालियों में बहा दिया जाता है। इसी प्रकार हजारों क्विंटल मिठाई और अन्य सामग्री को यों ही बरबाद कर दिया जाता है। धर्म की आड़ में लोग आलसी और निठल्ले रह कर भी जीवनयापन की सुविधाएं प्राप्त कर लेते हैं। ऐसी स्थिति में इस देश से बेकारी और गरीबी कैसे दूर हो सकती है?

यद्यपि देश से गरीबी और बेकारी को मिटाने पर आज बड़ा जोर दिया जा रहा है, पर प्रश्न यह है कि जब तक प्रत्येक देश वासी विवेकपूर्वक अपने कर्तव्य का पालन नहीं करेगा, तब तक स्थिति में आमूलचूल परिवर्तन कैसे किया जा सकता है और गरीबों को ऊपर कैसे उठाया जा सकता है ?

संसाधनों का भंडार

वैसे हमारे देश में खनिजों का अक्षय भंडार छिपा पड़ा है अन्य साधनों की भी कोई कमी नहीं है, कृषियोग्य भूमि भी काफी मात्रा में उपलब्ध है, और सब से बढ़कर बात यह है कि 60 करोड़ इंसानी श्रमशक्ति भी हमारे देश को प्राप्त है फिर भी हमारे यहां जिस प्रकार की गरीबी, अकर्मण्यता, आलस्य और बेकारी दिखाई देती है, वह हमारे लिए सचमुच लज्जा की बात है

देश के आर्थिक विकास और उसे समृद्ध बनाने के लिए आज कठोर श्रम करना बेहद जरूरी है जब तक सारे देशवासी एक जुट हो कर कठोर श्रम करने का दृढ़ संकल्प नहीं लेंगे, देश की आर्थिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त नहीं होगा।

यदि हम धर्म और सामाजिक रूढ़ियों के नाम पर अपव्यय होने वाले धन का उपयोग अपने नागरिकों को शिक्षा दिलाने या देश का औद्योगिक विकास करने में कर सकें तो कुछ वर्षों में हमारे देश की कायापलट हो सकती है ।

हमारे यहां जन्म से ले कर मृत्यु तक और हिन्दू समाज में तो मृत्यु के बाद भी धार्मिक संस्कारों के नाम पर धन का इतना अधिक अपव्यय होता है कि यदि उसे बचाया जा सके तो कुछ ही वर्षों में देश में आर्थिक क्रांति आ सकती है।

पर हमारे यहां तो धर्म के नाम पर कुछ ऐसा आडंबर फैला हुआ है कि हम आज भी दीपावली पर मात्र लक्ष्मी पूजन के समय न जाने कितना धन फूंक देते हैं। लोग केवल लक्ष्मी की पूजा कर के हि अपने को धनवान बनाने का स्पप्न देखते हैं। ऐसा करते हुए सैंकड़ों हजारों वर्ष बीत चुके हैं। पर क्या हमारे देश पर लक्ष्मी की कृपा हो पाई है?

हमारे देशवासी आज भी इस सत्य को गले नहीं उतार पा रहे हैं कि ब्राह्मणों द्वारा पूजाप्रतिष्ठा करने मात्र से ही लक्ष्मी जी प्रसन्न हो कर हमें कुबेर नहीं बना देंगी। यह निरा अंधविश्वास है। यदि इस प्रकार की बातों में कुछ भी सच्चाई होती तो हमारा देश और विशेषकर हिंदू जाति आज विश्व में सब से अधिक संपन्न जाति होती।

आज जब हम अपनी तुलना अमरीका और अन्य पश्चिमी देशों से करते हैं तो हमें अपने आप पर बड़ी ग्लानि होती है। एक ओर तो अमरीका और दूसरे देश हैं जो अन्य देशों के बच्चों के लिए दूध के डब्बे, गेहूं का दलिया भेजते हैं और उन के विकास कार्यों के लिए भी करोड़ों रूपयों की सहायता करते हैं, दूसरी ओर हम हैं जो अपने बच्चों को नियमित रूप से दूध या पौष्टिक आहार दे पाने में भी असमर्थ हैं। यह कितनी दयनीय स्थिति है! फिर भी हम लोग अंधविश्वास और रूढ़ियों के पालन में प्रतिवर्ष करोड़ों रूपये खर्च कर डालते हैं।

धन का अपव्यय :-

पर्वों, मेलों और तीर्थ यात्राओं के नाम पर जितना पैसा खर्च किया जाता है, यदि उस का उपयोग अपने बच्चों को पढ़ालिखा कर देश के सुयोग्य नागरिक बनाने में किया जाए तो क्या हम अधिक अच्छा कार्य नहीं करेंगे ? तो मूर्तियों पर दूध, फूल और प्रसाद चढ़ाते हैं, दूसरी ओर हम अपने बच्चों के प्रति भी अपने कर्तव्य और उत्तरदायित्व का पालन नहीं करते।

यदि परमात्मा नाम की कोई शक्ति है तो क्या वह हमारे इस व्यवहार से संतुष्ट हो सकती है ? क्या अपने बच्चों को देश का सुयोग्य नागरिक बनाने से बढ़ कर भी दुनिया में कोई और धर्म हो सकता है?

द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मनी और जापान की कैसी दुर्दशा हुई थी यह किसी से छिपा नहीं है पर आज दोनों देश अपने श्रम के बल पर इस छोटी सी अवधि में न केवल अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा हासिल कर चुके हैं, बल्कि उन्होंने अपनी आर्थिक स्थिति भी इतनी सुदृढ़ बना ली है कि उन की मुद्राओं के सम्मुख अमरीका का डालर भी कई बार लड़खड़ा चुका है। क्या हम इन देशों से सबक ले कर अपने अंधविश्वासों की दलदल से निकलने की कोशिश नही करेंगे ?

सच बात तो यह है कि जो अपने कर्तव्यों का सही रूप से पालन करता है, देश, समाज और मानव मात्र से प्रेम करता है, वही सच्चा मानव कहलाने का अधिकारी है।

पर हम लोग तो आज धर्म के नाम पर झूठे, अंधविश्वासों के भंवर जाल में ही गोते खा रहे हैं ओर ऐसी रूढ़ियों से चिपटे हुए हैं कि देश के नागरिकों का अधिकांश समय, श्रम और धन उन्हें निभाने में ही व्यर्थ नष्ट होता रहता है।

यह स्थिति हजारों वर्षों से इस देश में विद्यमान है। फिर भी हम संभलने का प्रयत्न नहीं

करते। यदि हम अंधविश्वास की जड़ों को काट कर स्वस्थ मस्तिष्क से अपनी स्थिति पर विचार करें तो हमारी यह गरीबी देखते देखते खत्म हो सकती है। गरीबी का संबंध असल में अज्ञान से है। जब तक हमारे देश की जनता अपने अज्ञान को दूर नहीं करेगी तब तक सही अर्थों में अपनी उन्नति नहीं कर सकती।

हमारे देश की युवा पीढ़ी यदि अब भी अंध विश्वासों के प्रति विद्रोह कर दे और देश में हो रहे धन के अपव्यय को रोकने के लिए जनसाधारण को प्रेरणा और मार्गदर्शन प्रदान करे तो देश में गरीबी और बेकारी का अंत होना असंभव नहीं है। श्रम के प्रति निष्ठा कर्त्तव्य पालन की भावना, अर्थिक मितव्ययिता और स्नेहपूर्ण नागरिकता की भावना ही हमारे देश से गरीबी और बेकारी दूर करने में सहायक हो सकती है।

इस कटु सत्य को हमारे देशवासी जितनी जल्दी मन में बैठा सकें उतनी ही शीर्घता से हम गरीबी और बेकारी से मुक्ति पा सकेंगे।

बिना सजगता के धर्म का मार्ग कठिन

धर्मपथ निरंतर सजगता से यात्रा करने का मार्ग है। वर्षों से संयमित मन में भी कब कौन सा संस्कार जाग्रत हो जाए इसकी कोई गारंटी नहीं।

एक पादरी चर्च में नए नियुक्त हुए थे। एक दिन वे बस द्वारा अपने गंतव्य को जा रहे थे। उन्होंने ड्राइवर को किराए के पैसे दिए और अपनी सीट पर बैठ गए। ड्राइवर ने जब पैसे वापस किए तो उन्होंने पाया कि उसने उन्हें गलती से 10 सेंट अधिक दे दिए। वे चुपचाप अपनी जगह पर बैठ गए और सोचने लगे-चलो थोड़ी देर बाद अधिक मिले पैसे में वापस कर दूंगा।

कुछ समय बीता, उन्हें विचार आया कहां मैं 10 सेंट जैसी मामूली रकम के पीछे परेशान हो रहा हूं। बेहतर है मैं वह अपने पास रख लूं। ये बस कंपनियां यों भी करोड़ों का मुनाफा बनाती हैं, ये 10 सेंट मैं भगवान की ओर से भेंट समझकर रख लेता हूं और इसे मैं किसी अच्छे काम में ही लगाऊंगा? इसी कशमकश में पादरी का गंतव्य स्थान आ गया, वे उतरने लगे। तभी यकायक दरवाजे के पास उनके कदम ठिठके। उन्होंने जेब में हाथ डाला और 10 सेंट निकालकर ड्राइवर को दे दिए और कहा भाई तुमने मुझे छुटटे बचे पैसे देते समय 10 सेंट अधिक दे दिए थे, इन्हें तुम वापस रख लो। ड्राइवर मुस्कुराया और बोला-क्या यहां के चर्च में आप ही नए फादर आए हैं? फादर ने हामी भरी। ड्राइवर बोला मैं कई दिनों से चर्च में आपके प्रवचन सुनने आने की इच्छा रखता था। आप को देखा तो मेरे मन में विचार आया कि चलो देखते हैं कि यदि आपको अधिक पैसे दे दूं तो आप क्या करते हैं? फादर जब बस से नीचे उतरे तो उनके पैर कांप रहे थे, वे आसमान की ओर हाथ उठाकर कहने लगे हे प्रभु आज तुमने मेरी लाज रख ली। मैंने तो 10 सेंट में तेरी शिक्षाओं की बोली लगा दी थी।

धर्मपथ निरंतर सजगता से यात्रा करने का मार्ग है। वर्षों से संयमित मन में भी कब कौन संस्कार जाग्रत हो जाए इसकी कोई गारंटी नहीं। इस मार्ग पर अपनी सीमा को जानकर सरल मन से प्रभु के प्रति समर्पित व्यक्ति ही सफल होते हैं।

अन्धे पैरोकार न बनें

हमारे देश का यह दुर्भाग्य रहा है कि हम लोग आंखों में पट्टी बांधकर और सिर पर लोहे की टोपी चढ़ाकर चलते हैं, वह कैसे? हम जब किसी को नेता बनाकर चलते हैं, तो उसके गुण दोषों का विश्लेषण करना भूल जाते हैं कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं जिसमें गुणों के साथ अवगुण न हों । जब तक कोई भी मनुष्य घर तक सीमित रहता है अर्थात् अपने परिवार और मित्रगणों तक ही उसका दायरा है तो हम उसके अवगुणों की तरफ ध्यान न भी दें तो काम चल सकता है, परन्तु जब कोई भी जन अपने सीमित दायरे से निकलकर बड़े दायरे में प्रवेश करता है, अर्थात् वह कोई राजनैतिक नेता, धार्मिक नेता या किसी संस्था का उच्च पद-धारी बन जाता है, तो उसके गुण जहां उसे आगे ले जाते है, उसकी कमज़ोरियाँ Organisations को डुबो देती हैं। इसलिए ऐसी कमेटियां आदि बनाई जाती हैं जो उस पर अंकुश रखें, परन्तु हमारी त्रासदी यह है कि हम भारतीय अधिकतर अन्धे भक्त हो जाते हैं और अन्धाधुनध अपना हर प्रकार का सहयोग उसको देते हैं। यह कोई बुरी बात नहीं, परन्तु जब किसी नेता की (चाहे वह राजनैतिक नेता हो या धार्मिक या कोई और उच्च पदाधिकारी) कमज़ोरियों और किसी पहलू में अयोग्यताओं को हम नज़र अनदाज़ करके चलते हैं या बिना सोचे समझे उसकी हर बात में हां में हां मिलाने लग जाते हैं अपनी बुद्धि शक्ति, अपनी सोच विचार का प्रयोग ही नहीं करते तो इसकी महा हानियों को भुगतना अवश्यम्भावी है।

उदाहरण के तौर पर हम देख सकते हैं कि पंडित नेहरू असाधारण योग्यताओं के मालिक थे, उनकी देश को आज़ाद करवाने में कुर्बानी, उनके परिवार का योगदान एक उदाहरण था। देश में अहिंसा की नीतियों के बहुत बड़े पोषक थे। नेता बनने के कई गुण भी वर्तमान थे। उनकी ऐसी योग्यताओं को देखकर सब उनकी कदर भी करते थे, विश्वास भी करते थे, इतनी कुर्बानी करने के बावजूद वह प्रधानमंत्री बनने के मोह को नहीं छोड़ सके। यदि उस समय जिन्नाह जो टी वी के मरीज़ थे 6 महीने में ही चल बसे, उस समय प्रधानमन्त्री का पद भी नेहरू जी को मिल जाता, परन्तु भारत और पाकिस्तान जिस तनाव से अब तक गुज़रे हैं, जो युद्धों में तबाही हुई है, जो सुरक्षा के लिए अपार धन राशि खर्च हुई, न केवल यह सब कुछ बचता, बल्कि देश की भलाई में यह शक्तियां खर्च होतीं, आज विश्व में हमारा कोई सानी न होता, परन्तु हमारी यह बदकिस्मती है कि हम एक मनुष्य के भक्त बनकर उसके गुणों के साथ उसके अवगुणों को भी पूजने लग जाते हैं।

पंडित नेहरू एक पद एक व्यक्ति के सिद्धान्त के पक्षधर थे, परन्तु स्वयं उन्होंने इस सिद्धानत को ठुकराते हुए प्रधानमन्त्री और कांग्रेस के अध्यक्ष पद को सम्भाले रखा, यही रिवायत बनी रही, जिससे जो अंकुश प्रधानमंत्री पर, कांग्रेस का होने के नाते कांग्रेस का अध्यक्ष लगा सकता था, वह न लग सका, लोकतान्त्रिक राज होते हुए भी प्रधानमंत्री एक डिक्टेटर के रूप में उभरने लगे और

इन्दिरा गांधी तक ही इस की हानियां मुखर हो गई थीं, परन्तु अंधी भक्ति ने इसकी ओर कोई कदम नहीं उठाने दिया।

पंडित नेहरू काला धन रखने वालों व जमाखोरों की भर्त्सना करते हुए यह कहा करते थे कि ''मै ऐसे जनों को लैंप पोस्ट कर लटका दूंगा'' परन्तु एक भी जन के विरुद्ध कोई ऐक्शन नहीं लिया गया।

पाकिस्तान उनकी नीतियों के कारण कश्मीर के मामले में सिरदर्द बन गया, चीन से हमें करारी हार खानी पड़ी, शिक्षा के मामले में हम इसलिए पिछड़ गए कि प्राईमरी शिक्षा की तरफ ध्यान न देकर ऊंची शिक्षा को ज्यादा महत्व दिया गया। यदि पंडित नेहरू के व्यक्तित्व का सही मूल्यांकन हमारे अन्य नेता करते रहते, तो उन की गल्त नीतियों का जम कर विरोध करते, इसमें देश का स्थाई हित था और पंडित नेहरू का व्यत्तित्व भी और निख़रता।

यह तो एक उदाहरण है, हमारे देश में ऐसे अनेकों उदाहरण मिल जाएंगे, जब हम किसी को नेता मान अन्धाधुन्ध उसके अनुयायी बन जाते हैं। यदि यह बात घर तक ही सीमित हो तो हानि कम होती है, परन्तु यदि कोई देश का नेता है, किसी समाज का नेता है या किसी अन्य संस्था का नेता है, तो इस प्रकार उस जन की हर बात को ही ठीक समझ कर उसके अन्धे भक्त बन जाना बहुत हानिकारक सिद्ध होता है।

इसका यह अर्थ नहीं कि हम केवल आलोचनात्मक रवैया अपना लें। इस बात का सामंजस्य रखना कि जो बातें ठीक हैं देश, समाज या संस्था के हित में हैं, उन पर विचार करने के लिए मंच खुला रहे और ठीक साबित होने पर उसका डटकर साथ दिया जाए। परन्तु एक आदमी में सब खूबियां नहीं हो सकतीं इसलिए उसकी कमजोरियों को भी नज़र अन्दाज़ नहीं किया जाना चाहिए। उसकी गल्त नीतियों या गल्त फैसलों का विरोध करना ही जन हित में होता है। बेशक यह बड़ा कठिन मार्ग है परन्तु मार्ग असल यही है। हम मनुष्यात्मा इतने कमजोर हैं कि हम जिसके पक्षधर बन जाते हैं, उसकी हर गल्ती को न केवल नजर अन्दाज करते हैं बल्कि उसके हिमायती भी बन जाते है। हम में यह साहस नहीं होता कि गल्त को गल्त और ठीक को ठीक कह सकें । इसी के परिणाम देश, समाज और संस्थाओं को भुगतने पड़ते हैं।

दूसरी ओर प्रत्येक नेता वा हैड का भी यह नज़रिया हो कि वह अपने फैसले या नीति के विरूद्ध बताने वाले को अपना दुश्मन वा विरोधी न समझे, उल्टा आलोचनाओं को निमन्त्रित करें ताकि उसकी नीतियों और फैसलों में जो कमी हो, वह दूर हो सके। मेरा अपना तजुरबा है कि हम किसी बात के लिए दस विरोधी ख्यालों वाले भी बैठ जाएं हम सकारात्मक वाद विवाद के बाद अवश्य ही एक फैसले पर पहुंच जाते हैं, और वह फैसला बेहतरीन फैसला होता है। अपने झूठे अहंकार को अवश्य छोड़ना पड़ता है। दस आदमियों के तज़रबे से किसी एक आदमी का तजुरबा कैसे बेहतर हो सकता है।

हमारे देश की जनता में सोच विचार की बहुत बड़ी कमी है। दूसरा स्वार्थ बहुत गहरा है। आज एक मनुष्य को सिर पर बैठा लेंगे और उसकी बड़ी से बड़ी गल्ती को नजरअन्दाज कर देंगे, यदि उसकी कुर्सी छिन जाए तो उसकी परछाई से भी भागने लगेंगे। बहुत थोड़े ऐसे जन होते है कि जो अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर सत्ता छिन जाने पर

भी किसी मनुष्य के सही गुणों की परख रखें, या सत्ता में रहने के दिनों में उसकी कमियों को बता सकें या उनके विरूद्ध खड़े हो सकें। हां में हां मिलाना कोई बड़ी खूबी की बात नहीं है। यह बहुत बड़ी कमजोरी है जो संस्थाओं को डुबो देती है। इसी कमज़ोरी का लाभ उठाकर सत्ताधारी अपने हां हजूरियों को भर्ती करके तानाशाह बन जाते हैं। परन्तु अन्त कितना भयानक होता है। वह किसी भी उदाहरण को ले लें, स्पष्ट हो जाता है। ऐसे जन व्यक्तिगत हानि भी उठाते हैं, और जिसके भी वह नेता है, उसकी भी महा हानि करते हैं।

अवगुण चिन्तन करना बहुत बड़ी हानि करता है, परन्तु झूठी चापलूसी करना और दूसरे की अयोग्यताओं की भी झूठी प्रशंसा करने से भी बड़ी हानि होती है। बड़ों के गुणों के लिए सम्मान बहुत आवश्यक है, परन्तु आवश्यकता पड़ने पर सम्मान पूर्वक उनकी कमजोरियों को बताना और उनका साथ न देने का साहस दिखाना भी अति आवश्यक है।

काश ! हम यह प्रश्न करते रहें कि हम कहीं गल्त नीतियों या फैंसलों की पोषकता तो नहीं कर रहे, इस सोच विचार में पड़े रहने में ही समाज का हित है।

पूजनीय भगवान ने जगह जगह पर इस विषय में अपनी देव वाणी में फरमाया है। माननीय श्रीमान् धर्मबल जी के किसी कागज़ के पेश करने पर पूजनीय भगवान ने फरमाया ''क्या कौंसल में यह भी होता है कि जब दिमाग साथ न देता हो तो एक के पीछे हां में हां मिला देते हो, या कुछ opposition (विरोधता) भी होती है ? और फिर वाकयात हासिल किए जाते हैं, और उनकी बिना पर फैसले होते हैं।'' आगे फरमाते हैं :

''मैं का अनुरागी इन्सान एक एक मामले में हकीकत की तह तक नहीं जाना चाहता। उसके सब फैसले अपनी 'मैं' को लेकर होते है। नेचर के सच्चे नियमों और वाकयात की वह परवाह नहीं करता।''

''किसी विषय में हकीकत को देखने में आंखें बन्द न करो, वरना तबाह और बर्बाद हो जाओगे, कि जैसे अब तक होते रहे हो।''

''किसी गठन प्राप्त सोसाईटी में उसके सब अंगों को हरकत में आने की जरूरत है, क्योंकि अगर सब अंग हरकत में न आवें तो नुकसान हो जाता है।''

''जहां घमण्ड हैं, वहां नेचर के किसी विषय के सम्बन्ध में इन्सान तहकीकात करना नहीं चाहता। ऐसा करने में नेचर के अटल नियमानुसार कोई सुख नहीं मिलता, इसलिए वह अपने और औरों के सम्बन्ध में मिथ्या विश्वासों से भरा पड़ा रहता है। और अपने आप औरों के सम्बन्ध में असल हकीकत को जानने के लिए रोशनी हासिल करना नहीं चाहता।''

''नेचर का यह नियम है कि जो बात तुम खुद नहीं जानते और जिसको कोई और जन जानता है और तुमको उस बात के जानने की जरूरत है, तो तुम उस जानने वाले जन की रहबरी में चलो। एक एक अन्धा आदमी आंखों वालों की रहबरी में चलता है। वह खुद भी कहता है कि मैं अन्धा हूं मेरी मदद करो।

.....जरूरत इस बात की है कि जो बात तुम नहीं जानते, मानो कि मैं नहीं जानता.....

घमण्ड से भरकर नुकसान मत उठाओ।''

(सुरजीत बराड़)

शुभ संग्राम

गोनिआना मंडी :- श्रीमान बलदेव सिंह जी 28 मार्च को चण्डीगढ़ से रवाना हुए। कल्याण श्रीमान बलबहादुर सिंह जी से मिले। उनको सरदार सावन सिंह जी की किताब के प्रूफ देखने के लिए दुबारा दिए गए। कुछ देर रुकने के बाद आगे गोनिआना के लिए चल पड़े।

यहीं श्रीमान ज्ञान चंद जी के घर रात को एक सभा रखी गई जिसमें आठ-दस जन शामिल हुए। उसमें बताया गया कि मनुष्य सुख का कीड़ा है, सुखों को प्राप्त करता-करता वह दुःखों में फंस कर घुल-घुल के नाश हो जाता है, हमारी नीच रुचियों से सदा सर्तक रहने की जरूरत है। नीच रुचियां कैसे समाज में आकर भी मनुष्य को बर्बाद करती हैं, उदाहरण देकर समझाया भी गया। 29 मार्च सवेरे एक सभा रखी गई जिसमें पहले वाले जनों सहित श्रीमान बाबू राम जी 89 साल की उमर और बहुत कमजोर सेहत के साथ सभा में पहुंच गये। श्रीमान मुखतियार सिंह जी औलख भी महिमा सवाई से सुबह चलकर पहुंच गये। इस सभा में बताया गया कि मनुष्य लगभग सारे ही यह समझते और विश्वास करते हैं कि मुझे सब पता है, मैं जानता हूँ, मैं जानता हूँ, मैं ठीक हूँ, जबकि यह बात सच्चाई से पूर्ण विपरीत है। मनुष्य न ही असंख्य बे-जान पदार्थों को, न वृक्षों को न पशुओं को और न ही मनुष्यों को जानता है। न ही पहचानता और समझता है। इसलिए कई बड़े लाभों से वंचित रहता है। महान और उच्च मनुष्यों को देखना और पहचानना बहुत ही कम लोगों की विरासत में आता है। देव-आत्मा संसार में आकर वो कारज करते हैं, जो पहले न किसी ने किये हैं, न ही अभी कोई करता है, न कर सकता है तथा न कोई और आगे भी कर पावेगा। पर मनुष्य आत्मा को न देव आत्मा तथा न उनका अनोखा कारज नज़र आता है। वह सारे उच्च लाभों से महरूम रह कर जीवन बर्बाद करके जाता है।

रात की सभा में कुछ और जन भी आ गये। बठिंडा से श्रीमान क्रिशन कुमार जी शर्मा और उनकी धर्म पत्नी जी भी आ कर बहुत खुशी से भरकर मिले। उन्होंने सत्संग बारे जानकारी हासिल करने की इच्छा दर्शाई। यह सभा सम्बंधों के बारे में कराई गई। बताया गया कि तीन सम्बन्धों में खास करके ध्यान देने की जरूरत है माता पिता पति-पत्नी तथा बहिन भाईयों के संबंध में। सम्बन्ध उच्च भावों से ही सुंदर मीठे और हितकर बन सकते हैं। उच्च भाव इस संगत में बार-बार आकर अधिकारी हृदयों के अंदर पैदा हो जाते हैं। गुरु महाराज किस प्रकार संबंधों में उच्च बना देते हैं। उसका ब्यान किया गया।

30 मार्च की सुबह को यहां एक सभा कराई गई। जिसमें केवल 8-9 जन ही शामिल हुए। इस सभा में बताया गया कि मनुष्य कमियों या गल्तियों का पुतला है। यह अपनी कमियों और गल्तियों को अपने-आप देख नहीं सकता है। किसी मन्दिर, गुरुद्वारे या मस्जिद, गिरजे में भी मनुष्य का ध्यान अपनी कमियों की तरफ नहीं जा सकता। अपना नीच रूप देखने के लिए नेचर ने मनुष्य को देव आत्मा की ज्योति का मोहताज रखा है। सभा पति ने बताया कि कैसे उनको नाना सम्बन्धों में अपनी कमियां नज़र आती रहीं और उनका सच्चा परिशोध करने के लिए देव आत्मा की शक्ति के साथ मजबूर होते रहे। सभा के बाद हाजरीन जोगा सिंह मास्टर जी ने 500रू० तथा

बाकी 250 रू० और दान भी प्राप्त हुए। दो जनों से अखबारों का चंदा वसूल हुआ। यहां यह छोटा सा सत्संग सफल हुआ। शाम तक श्रीमान जी कल्याण पहुंच गये।

कल्याण :- 30 मार्च की रात को यहां एक सभा कराई गई। एक दर्जन स्त्री पुरुष इसमें आकर शामिल हुए। सभा में बताया गया कि गुरु महाराज की संगत से जुड़े रहना उच्च बरकतों का भागी बनना है। इसके साथ जुड़ने की कीमत चुकानी चाहिए। परिवार या और सम्बन्धियों का विरोध बहादुर होकर बरदाशत करना होवेगा। इस संगत से परे होना, सदा डरने की जरूरत है।

31 मार्च की सुबह 8.30 बजे सभा कराई गई। इसमें केवल 9-10 जन ही शामिल हुए। इसमें अंधेरे के बारे बताया गया कि मनुष्य को 5-7 फीसदी रोशनी है, बाकी अंधकार ही अंधकार है, उसकी हानियों की थाह नहीं। दुनियावी सामानों, धन, धरती का जो मूल्य मनुष्य ने लगाया है, उससे अंधेरा ही और पैदा हो रहा है। मनुष्य को किस कीमती कमाई की जरूरत है, वह नज़र नहीं आती। जिस कमाई की उसे उतनी जरूरत नहीं, उसके पीछे अपना जीवन लगा देता है। नुकसान और हानियों की हद नहीं रहती। समाज की संगत की असल कीमत दिखाई नहीं देती। ये सारी उमर ही अंधेरा देखने नहीं देता। इसकी बरकतें नज़र नहीं आती। गुरु महाराज की रोशनी अंधेरों का ज्ञान देती है, उसकी हानियों से बचाती है।

चण्डीगढ़ :- यहां लगभग हर रविवार को सभा होती रही है। इस सभा में स्थानी सेवक, सेवीकायें, सभी कभी कोई आ-आ कर शामिल हो जाते हैं। एक-एक सभा में हाजरी 22-24 तक भी होती रही है। माता पिता सम्बन्धी खास सभाओं की C. D. कई जनों को वितरण की जाती रही है। धर्मशाला कागड़ा से श्रीमान विनोद जी डोगरा और उनकी धर्म पत्नी श्रीमति कान्ता जी भी कई सभाओं में शामिल हुए। ओम प्रकाश जी यमुनानगर भी कई सभाओं में शामिल हुए। श्री हरबंस सिंह जी और उनकी पत्नी (कल्याण निवासी) कभी-कभी एक एक बच्चे के साथ बहुत सारी सभाओं में शामिल होते रहे। मल्लेका (सिरसा) से कई विद्यार्थी भी खुशी-खुशी कुछ सभाओं में आकर शमिल हो जाते हैं। 22 अप्रैल रविवार की सभा में भेंट का साधन हुआ, जिसमें 125 रू० भेंट की वजह से प्राप्त हुए। श्रीमान जीत सिंह जी मल्लेका की तरफ से 500 रू० दान प्राप्त हुआ।

समाज की दोनों मासिक पत्रिकायें समयानुसार प्रकाशित हुईं और पोस्ट होती रही। इसके प्रूफ प्रिंसीपल शशी खेड़ा जी और मिसिज सुरजीत बराड़ जी बड़ी मेहनत से देखने की सेवा करते हैं। मंडी डबवाली मन्दिर से श्रीमान हंस राज से पता चला है कि उनके संग्राम से कुछ एक जन देव धर्म सत्संग के नजदीक हुए हैं। उन्होंने वहां शीघ्र सत्संग रखे जाने के लिए प्रार्थना की है। उन्होंने मन्दिर के वृक्षों आदि का, इस गरमी में भी, खास फिकर से ख्याल रखा है और रख रहे हैं जो बहुत खुशी की बात है।

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी कल्याण में रविवार की सभा करवाते रहे हैं। उन्होंने सरदार सावन सिंह जी के जीवन चरित्र जो पंजाबी में है, के प्रूफ भी दो बार देखे हैं।

पदमपुर :- श्रीमान डा. मनसा सिंह जी सारा साल लगभग हर रोज़ घंटा-घंटा शाम-सवेरे दो सभायें मन्दिर में करते हैं जिसमें थोड़े-थोड़े चंद जन आकर शामिल होते हैं। चर्चा करते हैं और लाभ उठाते हैं। पुस्तकों को लेकर पढ़ते हैं।

WPP - Regd. Postal No.Pb (0078) 2006
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

धर्म के लिए विद्रोह

इंगलैंड में विलियम (द्वितीय) ने जेम्स का तख्ता पलटकर कर शासन संभाला था। राज्य के एक अग्रणी धर्म निष्ठ व्यक्ति को लगा कि राजा जेम्य के साथ अन्याय हुआ। उसे ईसा मसीह के वचन याद आए कि जो अन्याय व अधर्म का विरोध नहीं करता, वह पाप का भागी बनता है। वह व्यक्ति राजा जेम्स को पुन सत्तारूढ़ किए जाने के अभियान में शामिल हो गया।

एक दिन गुप्तचर विभाग को विद्रोह के प्रयास का पता चल गया। विद्रोह का प्रयास करने वालों की सूची व कागजात राजा विलियम के सामने पेश किए गए। विलियम को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि राज नीति से दूर? राजा ने उस व्यक्ति को अपने महल में बुलवाया। उसे लगा कि अब उसके प्राण बचना असंभव है। राजा विद्रोही मानकर उसे फांसी की सजा देगा।

विलियम ने कागजात दिखाते हुए पूछा, 'आप तो एक धार्मिक हस्ती हैं। राजनीति से अपने कभी कोई संबंध नहीं रखा। फिर इस विद्रोह में शामिल क्यों हुए? 'उसने कहा, जेम्स को राजा के पद से अन्यापूर्वक हटाया गया। एक नागरिक के नाते मेरा कर्त्तव्य था कि इस अन्याय का विरोध करूं। प्रभु ईसा के वचनों से प्रेरित होकर मैं इस विद्रोह में शामिल हुआ,

यह सुनते ही विलियम ने कागजात मोमबत्ती की लौ के हवाले कर दिए तथा कहा, जो व्यक्ति राजनीतिक स्वार्थ के लिए नहीं न्याय के लिए मेरे विरोध में शामिल हुआ है, वह दंडनीय नहीं, सराहनीय है।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री – देव – धर्म – मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, # 68, Shop No. 3, Badheri 41-D, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21 – डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts